E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2022; 4(1): 367-370
Received: 26-01-2022
Accepted: 02-03-2022

प्रियंका कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी-विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
प्रियंका कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी-विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

पत्ताखोर : नशाखोरी की अभिशप्ति

प्रियंका कुमारी

सारांश
मधु काँकरिया रचित उपन्यास 'पत्ताखोर' सच में नशाखोरी के अभिशाप को पाठकों के सामने लाता है। उपन्यास का नायक जोकि एक सभ्य और शिक्षित परिवार का बालक है, वह अपनी बुरी संगति के कारण नशाखोर हो जाता है। आरंभ में जिस नशा को वह शौकिया तौर पर लेता है, वही नशा बाद में मजबूरी बन जाती है। वही नशा उसे जीवन बचाने के लिए चाहिए। कथानायक की इस दुर्दशा के लिए कई चीजे जिम्मेदार हैं– जैसे- माता-पिता, की व्यस्तता, शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक संस्कार, एकाकीपन, कुसंगति आदि। आखिरकार नशाखोरी एक ऐसा अभिशाप है जो धन, धर्म और स्वास्थ्य सब चौपट कर डालता है। उपन्यास में कथानायक के बहाने इसकी परिणति देखी जा सकती है।

मुख्य शब्द: 'पत्ताखोर' सच में नशाखोरी, शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक संस्कार, एकाकीपन, कुसंगति

प्रस्तावना
यह 2005 ई. में राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित मधु काँकरिया का तीसरा महत्त्वपूर्ण उपन्यास है पत्ताखोर। इस उपन्यास में एक युवक के जीवन-संघर्ष की कथा है। उपन्यास का कथानक इसके मुख्य पात्र आदित्य के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। आदित्य, हेमंतबाबू और बनश्री का बेटा है। माता-पिता दोनों नौकरी पेशा होने की वजह से 12-13 वर्ष से ही अकेला पड़ा पुत्र आदित्य है। इनके पिता जितने शांत, संत स्वभाव के, माँ उतनी ही बदमिजाज और प्रचंड गुस्सेवाली। लेखिका ने लिखा है कि- ''एक ही घर में रहते हुए भी तीन जिन्दगियाँ अपने-अपने द्वीप में बहती-बिचरती रही, बिना किसी हो छूते हुए।"[1]

पारिवारिक असंतोष के कारण आदित्य असह्य विचारों के बीच एक सुंदर उड़ान भरना चाहता है। उसे पढ़ाई से अधिक संगीत में मजा आता है। पूरे संसार के लिए प्यार भरे गीतों की रचना करना चाहता है। इन्हीं तनावों के मध्य बोर्ड परीक्षा अच्छे अंकों से पास करने वाले आदित्य अपनी खुशी ढूँढ़ते हुए ऐसी जगह, पहुँचता है, जहाँ ताड़ी और गांजा धड़ल्ले से सेवन किया जाता है। सहपाठी का बड़ा भाई अभिज्ञा उसे पहला सुट्टा मारने के लिए प्रोत्साहित करता है और खतरनाक नशे का यह प्रवेश द्वार आदित्य की जिंदगी में खुल जाता है। सोलह साल की अवस्था में ही धूमपान करते आदित्य को पिता केवल उपदेश देकर समझाते हैं। बारहवीं की टेस्ट में रोक दिया जाता है। बोर्ड की परीक्षा में बैठने के लिए माँ-बाप के आश्वासन की आवश्यकता होती है। स्कूली डिग्री हासिल करने के बाद संगीत और कैरियर दोनों पर ध्यान आकृष्ट करने की सलाह दे हेमंत बाबू आदित्य को समझाने की कोशिश करते हैं। बोर्ड की परीक्षा में उसका नाम न पाकर मायूस आदित्य अपने लिए किसी मुकम्मल आकाश की तलाश में घर से पलायन कर

जाता है और पुरी के सम्राट होटल में नौकरी करने लगता है। उसी होटल में आदित्य एक युवक के माध्यम से होटल के कामों में ही दुबारा हेरोइन का नशा करता है। इस कारण उसकी होली की रिसेप्शनिस्ट की नौकरी भी छूट जाती है। जैसे-तैसे पिता को उसका पता मिलता है। पिता के साथ लौटता आदित्य पहली बार घर की सुरक्षा और कमरे की उष्णता को महसूसता हुआ पिता के प्यार अपने योग्य नहीं समझता। मैं माँ-बाप की आशा के अनुरूप शायद ही बन सकूँ यह सोचकर वह तड़प उठता है।

पुरी से लौटने पर आदित्य कॉलेज में प्रवेश लेता है। बनश्री बेटे के लिए अपनी बैंक की नौकरी से त्यागपत्र दे देती है। पति के गिने-चुने आठ नौ हजार में घर संभालता मुश्किल हो जोने के कारण उसे पछतावा भी होता है। एकाध साल घर में शांति रहती है, लेकिन पुनः वही स्थिति। बात-बात पर माँ का हस्तक्षेप, निरंतर चीखना-चिल्लाना इन बातों का आदित्य पर फिर असर होने लगता है। पुरी से लौटे ढ़ाई साल से कॉलेज और कॉलेज से घर की परिधि में जीने वाले आदित्य घर के बिगड़ते वातावरण के कारण गलत संगत में पहुँचता है और पुनः ढाई साल बाद देवांशु के साथ आदित्य शौकिया हेरोइन का नशा करता है। नशे के आनंद में हफ्ते में नशा करने वाला आदित्य दो-तीन दिन में नशा करने लगता है। अपनी हताशा, जिंदगी को बोरियत और भविष्य-हीनता से लड़ने का यही रास्ता वह अपना लेता है। उसकी चेतना में सिर्फ नशा ही रहा जाता है' दो-चार दिन में ही अदम्य, दुर्दान्त तलब के कारण उसकी विदड्रायल की स्थिति आ जाती है। एक सुबह इसी स्थिति में शरीर बुरी तरह ऐंठने लगा, जीभ तालू में चिपक गई, आँखों से, नाक से पानी गिरने लगा और शरीर के भीतर हल्की कँपकँपी होने लगी। अब उसे नशा, आनंद के लिए नहीं इस जानलेवा यंत्रणा से छुटकारा पाने के लिए चाहिए होता है। नशे के अभ्यस्त व्यक्ति को रूटिन डोज के अभाव में होनेवाली यह शारीरिक यातना केवल एक पत्ता (एक ग्राम हेरोइन का आठवाँ भाग) पाने के लिए मरणोपरांत दर्द से तड़पती है। ''कैसे सर्वनाशी चक्रव्यूह..... पीड़ा का कारण भी वही और उपाय भी वही।"[2] 15 रूपये का एक पत्ता पाने के लिए आदित्य को पैसों की आवश्यकता पड़ने पर वह अपने ही घर में चोरी करने लगा। माता-पिता के रूपये अपनी घड़ी, अपनी किताबों यहाँ तक कि गणेशजी की पीतल की मूर्ति तक उसने बेच दी। चार-चाढ़े चार महीने में ही नशो की आदित्य को अपने जबड़े में पकड़ लिया। निर्माणाधीन मकान या खोलाबाड़ियों में जाकर नशा करनेवाला आदित्य अपने घर की बाथरूम में ही नशा करने लगा। इस तरह दिन से रात बनता जा रहा था। शिव से शव बनता जा रहा था आदित्य।

एक दिन पन्नी, मोमबत्ती और माचिस के जरिए उसके पिता उसे नशावान करते देख लेता है। वे इस तरह की स्थिति से बेहद मर्माहत होते हैं। गुस्से से उस पुड़ियाँ को फाँक लेते हैं। दस मिनट में ही उल्टियाँ होने के कारण डॉक्टर को बुलाने से पहले वे आदित्य से इस नशे को छोड़ने की कसम लेना चाहते हैं। अपने किए पर शर्मिंदा आदित्य माफी मांगता है। आदित्य ने इस विनाशकारी नशे को अपनाया। अब इसे छुड़वाने के लिए 'डिटोक्सी फिकेशन' का ट्रीटमेंट करवाना होगा, तभी उसका वॉडी सिस्टम नार्मल हो आदित्य इस नशे को छोड़ पाएगा। दोनों पिता-पुत्र मनोरोग विशेषज्ञ डॉ. सरोज काबरी की सहायता लेते हैं। 'बाऊल मन नर्सिंग होम' में आदित्य को भर्ती किया जाता है।

अपने मित्र ओमप्रकाश की भाँति आदिवासियों की सेवा करने की इच्छा रखने वाले हेमंत बाबू इस नर्सिंग होम में आकर समझ पाते हैं कि "कहाँ सपना देखा था-जन आंदोलनों से जुड़ने का .....हर आँसू को पोंछ देने और कहाँ एक अच्छा पिता तक नहीं बन सके।"(3) सिर्फ आदित्य ही नहीं अकेले कलकत्ता में चालीस प्रतिशत युवा गांजा, हेरॉन, ब्राउन सुगर जैसे किसी न किसी नशे का शिकार है। अमेरिका से भयवाह यह स्थिति कलकत्ते की, क्योंकि गली-गली में यह एकदम सस्ता मिल जाता है। शायद इसी वजह से आज ड्रग के शिकार संजय दत्त से लेकर फुटपाथिए तक दिखाई पड़ते हैं।

28 दिनों तक इस नर्सिंग होम में हर रोज 180 रूपये खर्चा करने के बाद आदित्य को अंतराग्राम रिहेबिलिटेशन सेंटर में आगे का इलाज करवाने जाना पड़ता है। पूरे चार महीनों तक स्पिरिचुएल ट्रेंनिंग देकर उसे मानसिक रूप से शक्तिशाली बनाने की कोशिश और इसके लिए बाराह हजार का खर्चा अलग से। घर के बिगड़ते बजट के बावजूद हेमंत बाबू हार नहीं मानते। आदित्य के साथ इस सेंटर में हेमंत बाबू पहुँचे और उन्हें ऐसे कितने ही आदित्य यहाँ पर दिखाई दिए। अरूण बाबू का 11-12 वर्षीय पुत्र चिकू अपने ही मामा के लड़के की बदतमीजी का शिकार हुआ था। वह चिकू को फिजिकली एब्यूज करता था, जिस कारण आज चिकू एडेटिम था। उसका भीतरी सौन्दर्य मर गया था। बात -बात पर वॉयलेन्ट हो जाता था। बाल-मनोवैज्ञिक डॉ. जावेरी के इसी हॉस्पिटल का एक और सच-विवेक सक्सेना जो गुवाहाटी विश्वविद्यालय में प्राध्यापक था। वही ग्रामीण अर्थव्यवस्था और बैंकिंग विषय पर शोध कर रहा था। अपने गुरू पर अपना ही अदम्य विश्वास, लेकिन

शोध-पत्र छपकर आने पर शोधकर्त्ता की जगह दिपदिपाता नाम उसके प्रोफेसर का था। इस घुटना से आहत ब्राउन शुगर का शिकार बने विवेक को यहाँ एडमिट किया गया था। इस महत्त्वाकांक्षी युवक की हालत देख हेमंत बाबू काँप। जाते हैं। इस महाबिमारी से अपने संतान को बचाना है तो पहले इसकी गंगोत्री ही खत्म करनी पड़ेगी। पूरी दुनिया से इसे हटाना होगा। चारों तरफ इसके खरीद-फरोख्त के फैलते बाजार पर अंकुश लगाना होगा। इस उपन्यास में हेमंत बाबू पूरे समाज को इस बुराई से बचाने की शपथ लेते हैं।

उपन्यास का महत्त्वपूर्ण पात्र आदित्य भी धीरे-धीरे नार्मल होने लगता है। प्रतिदिन मिलनेवाली आठ बीड़ियों का खुराक और दिनभर का श्रम उसे बिना नशे के नींद में ले जाता था। सलीकपूर्ण ढंग से नशे की मानसिक तलब को बेदखल का आध्यात्मिक प्रशिक्षण देकर उसके सार्थक जीवन की कामना प्रो. रामकृष्ण करते हैं। प्रोफेसर शास्त्री जी का कथन है कि आप स्वयं को शिव समझो आप शिव हैं। आप स्वयं को शव समझे तो आप शव हैं। आप स्वयं को ड्रग पर निर्भर समझे आप ड्रग एडिक्ट हैं। जैसी मानिसकता वैसी दशा। याद रखिए जिंदगी उसी की है जो जीना जनता है आकाश उसी का है जो उड़ना जानता है।"[4] उनके इन विचारों के पीछे उनका अतीत जीवित था। लंदन में चार वर्षों तक मजदूरी कर परिवार को अधिक से अधिक पौंड बचाकर खुशहाल करने का सपना लेकर दिन-रात मेहनत की और अचानक स्वदेश अपने घर छोंटे तो देखा कि अपनी पत्नी अपने ही दोस्त के साथ सो रही थी। सात वर्ष के पुत्र को भी उस औरत ने उनके खिलाफ कर दिया था। कुछ सालों बाद पुत्र से मुलाकात होने पर वह नशेबाज और नशे का धंघा करनेवाला पुत्र तिहाड़ जेल में दस सालों की सजा काट रहा था और तबसे प्रोफेसर शास्त्री का धर्म, कर्म और ध्ये एक ही था दृग्भ्रांत युवकों को इन्सान बनाना।

आदित्य इलाज कर घर लौटता है। पिता घर आते ही उसे सिन्थे साइजर 'भेंट देते हैं और आदित्य अपने जीवन के आनंद को ढूँढ़ने लगता है। कविताएँ, संगीत उसकी जिंदगी का अहम् हिस्सा बन जाते हैं और ऐसे ही कॉलेज के एक कार्यक्रम में आदित्य को एक नृत्यांगना राशि प्रभावित करती है। राशि की स्वप्नयुक्त आँखें आदित्य को भी स्वप्न देखना और जीना सिखा देती है। दोनों एक-दूसरे में घुल -मिल जाते हैं और एकाएक चार महीनों तक राशि से उसकी मुलाकत नहीं हो पाती है। उसके घर जाने पर ज्ञात होता है कि उसकी माँ कैंसर से लड़ रही है जो मुश्किल से साल भर निकाल पाए। राशि और बहन श्यामली के प्रति चिंतित माँ के सामने राशि से उसकी मुलाकात नहीं हो पाती। राशि और बहन श्यामली के प्रति चिंतित माँ के समक्ष राशि आदित्य को खड़ा नहीं कर सकी, क्योंकि अभी तक वह कुछ कमाता नहीं था। उसकी जिम्मेदारी उठाने लायक नहीं बना था। ऐसे में दोनों में बनी दूरी अपना काम कर जाती है। माँ की बीमारी में उलझी राशि और स्वयं को राशि के लायक बनाता आदित्य प्रतियोगिता की तैयारी करता है। तभी शादी का निमंत्रण कार्ड जिस पर राशि के पिता दीपंकर बनर्जी का नाम पढ़ते ही वह झल्ला जाता है। बिना पढ़े ही कार्ड को फाड़ देता है। राशि की शादी का कार्ड समझ के वह अंततः टूंट जाता है। पूरे दो साल बाद आदित्य फिर हेरोइन की गिरफ्त में फँस जाता है। पिछली ट्रींटमेंट में प्रोविडेंट फंड की खासी रकम उड़ गई हेमंत बाबू की, पर अब वे समझ जाते हैं- जो अनजान में फिसले उसे संभाल जा सकता है, पर जो अपनी इच्छा से गिरे उसे कैसे संभाला जाए। आदित्य फिर एक बार घर छोड़ कर चला जाता है। उसकी मुलाकात विश्वजीत से होती है, जो नशेबाज होने के साथ ही नशे का धंधा भी करता है। जिंदगी, परिवार और प्यार में फँसा' विश्वजीत आदित्य को भी इस धंधे में घसीटना चाहता है। तथापि आदित्य में अभी मानवता शेष है। वह अपने कारण किसी भी जिंदगी नष्ट करना नहीं चाहता। विश्वजीत की बूढ़ी माँ के साथ रहते आदित्य की अनेक कोशिशों के बावजूद विश्वजीत सुधरना नहीं चाहता। विदड्रालय की स्थिति में भी आदित्य को उसने एक पत्ता भी नहीं दिया और तभी आदित्य ने उस अपराध जगत को विश्वजीत के घर को छोड़ दिया पुनः एक बार आदित्य खुले आकाश के तले अकेला विवश। खुद बर्बाद हुआ, पर दूसरों को नहीं करूँगा कि संकल्प को ठान वह सियालदह और मौहेली के फुटपाथों की जिंदगी से परिचित होता है। एक ही रात्रि उस फुटपाथ पर बिताने पर वह अपने बजूद को भयंकर बदबू में परिवर्तित पाता है।

एक परम शुद्धतावादी वैष्णवी परिवार में पले-बढ़े आदित्य के लिए यह फुटपाथी जीवन किसी भयानक हादसे से कम नहीं था। जीवन से होकर आत्महत्या का विचार मन में लिए आदित्य पाता है कि जिंदगी की तरह वह मौत के सामने भी बेबस है। जीवन को समाप्त करने हेतु उसे पुनः नशे की आवश्यकता महसूस होती है। एक ओर मरते पति की अंतिम चाह को पूरा करने की पत्नी की बेताबी को देख आदित्य जीवित होने का मतलब समझता है। कितना हाहाकार एक जीवन के लिए और इसी जीवन को वह खत्म करना चाहता है। इसी खींचतान में एक दिन वह मोहनबाग लेने पहुँचता है। एक तरफ भव्य अट्टलिकाएँ और दूसरी तरफ एक ईंट की

दीवार-पर टीन या खपरैल की छत से बनी खोला-बाड़ियों का मिला-जुला रूप थी, यह मोहनबाग लेना। खटर-पटर करती एवं धमाल मचाती एक पूरी आबादी दुनिया। जिस खौंफनाक सन्नाटे की यातना। आदित्य ने अपने पिछवाड़े के फ्लैट में रहते अपने बचपन और किशोरावस्था के दिनों में भोगी थी, वह यहाँ सिरे से नदारद थी। अभावों के भयंकर दुष्टचक्र के बावजूद लागे जीवन से हार नहीं मानते थे। हाथ रिक्शा चलाने वाले लोग हाड़ तोड़ मेहनत करके भी अभाव से ग्रस्त इस मुहल्ले के जीवन से आदित्य समरस होता जा रहा था। हरिया और कालिदास की दोस्ती, लालबहादुर के गाँव को आदमी हाथ रिक्शा चलाने वाला सहदेव, इतवारी इन पात्रों के माध्यम से लेखिका ने इनका फुटपाथिया जीवन चित्रित किया है।

कालिदास की वेश्या मिताली से शादी, स्त्री-प्रेम के एक छींट के लिए तड़पते हरिया की आत्महत्या, मेहतर सोना डोमनी की अगले जन्म में ऊँची जाति की चाह ये सारी जिंदगियाँ आदित्य को प्रभावित करती जाती है। यहाँ का जादू-टोना, अंधविश्वास, पत्नियों की पिट्राई, धर्मांधता, गाली-गलौज, गंदगी, हाथ-तौबा, मच्छर, ताड़ी-सेवन इन सारी परिस्थितियों के बावजूद आदित्य इन लोगों की तरफ खिंचता जाता है। क्योंकि इन्हें देखकर ही उसने संतोष की शक्ति को जाना था। सभी प्राणियों को समान भाव से देखने की इनकी सौन्दर्य दृष्टि देख आदित्य अपने नशे पर नियंत्रण पाता-जा हरा था। उसके इंसान बनने की शुरूआत हो चुकी थी।

इन्हीं बस्तियों की एक और कहानी सहदेव और पुष्पा देवी की जो आदित्य के जीवन को उभार देती है। रवि उनका बेटा न होकर भी बेटे से बढ़कर प्यार दिया दोनों ने उसे। रामेश्वर और-शिबू एक ही रिक्शा दो शिफ्टों में चलाते हैं। मेहनत के इन बादशाहों की छोटी-छोटी मुरादों, उम्मीदों और चिंताओं को देख आदित्य का मन भर आता है। इस बस्ती में गर्मियाँ भी जानलेवा सिद्ध हुई। आदित्य को चिलचिलाती धूप से फुंसियाँ निकल आयी तो पंचम और राजाराम को गर्मी ने निगल लिया। इस घटना से तो आदित्य को डी-टोक्सी फिकेशन के लिए किसी नशे की आवश्यकता भी नहीं पड़ी। इन सभी श्रमजीवियाँ के लिए आदित्य कुछ करना चाहता था। इन सबको संगठित कर श्रमिक एवं 'रिक्शा चालक संघ' की स्थापना की।

मोहनबाग लेन की बस्ती में रहकर लोगों की समस्याओं की हल करने का काम आदित्य करने लगा। विद्रोह और संघर्ष को घर-घर तक पहुँचाया इन असंख्य लोगों से एकात्म होकर उसने जाना कि बड़ी खुशी और सच्चा सुख सर्देव लोकहित के कामों से जुड़कर मिलता है। पुष्पा देवी ने साढ़े तीन लाख के जेवरात अपनी स्त्री पूँजी इन श्रमजीवियों के उद्धार के लिए आदित्य को दे दी। पाँच वर्षों की एकाग्र निष्ठा और दृढ़ता के कारण यह रिक्शा यूनियन कई शाखाओं में फैल गयी। आदित्य को अब बस्ती के साथ-साथ सारे लोग-पहचानने लगे थे। एक दिन हेमंत बाबू और बनश्री आदित्य को ढूंढते वहाँ पहुँच जाते है। हेमंत बाबू ने 'पुनर्जन्म' संस्था के द्वारा नशे के शिकार युवाओं को सुधारने का काम शुरू किया था। आदित्य को अपने साथ ले जाना चाहते हैं, परंतु आदित्य बस्ती के लोगों का विश्वास नहीं तोड़ना चाहता। इन गंदी झोपड़ियों के टुकड़ों-टुकडों में बिखरी खंडित जिंदगियों ने ही उसे अखंडित जीवन-दर्शन दिशा है कि किसी भी हालत में जिंदगी से हार मानना ठीक नहीं। ''जी सबको अपना ले, वही शिव है, बाकी सब शव है।''(5)

इस उपन्यास के अंत में राशि का हेमंत बाबू के जरिए आदित्य को पता चलना कि वह आज भी अविवाहित है और आदित्य का इंतजार कर रही है, पंरतु आदित्य माता-पिता का स्नेह, राशि का प्यार इस सबसे ऊपर बस्ती के लोगों का जीवन मानना है। अभाव में भी हँसी-खुशी जीवन बिताने वाले इन लोगों ने ही आदित्य के जीवन में रंग भरा था। सात साल बीत जाने के बावजूद राशि को वह अपनाने के बजाय इन लोगों के लिए अपना जीवन समर्पित कर देता है। अंत में सब सुख-समृद्धि छोड़ वह फिर मोहनबाग लेने की बस्ती मे लौट जाती है।

संदर्भ सूची:

1. पत्ताखोर: मधु काँकरिया, पृ. - 23
2. उपरोक्त, पृ. - 59
3. उपरोक्त, पृ. - 78
4. उपरोक्त, पृ. - 89
5. कथाकार मधु काँकरिया-डॉ. सुनीता कावले, पृ. - 204